• गुजरात..

अंबाजी मंदिर

गुजरात में स्थित अंबाजी मंदिर भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक है, जो अंबाजी कस्बे के पास गब्बर नाम की एक पहाड़ी पर स्थित है। कहते हैं, यहां तब से एक बेहद प्राचीन मंदिर है, जब मूर्ति पूजा की शुरुआत भी नहीं हुई थी। यह मंदिर मां दुर्गा के एक रूप देवी अंबा को समर्पित है। मां अंबा शक्ति का अवतार मानी गई हैं। 3 अक्टूबर, 2024 से नवरात्रि पूजा की शुरुआत हो रही है, आइए इस शुभ मौके पर जानते हैं, अंबाजी शक्तिपीठ से जुड़ी उपयोगी और रोचक बातें।

मान्यता है कि देवी सती के शरीर के टुकड़े जहां-जहां गिरे, वहां शक्तिपीठ स्थापित हुए। अंबाजी में देवी सती का हृदय गिरा था। इस मंदिर के सबसे अनूठे पहलुओं में से एक यह है कि इसमें कोई मूर्ति नहीं है, बल्कि देवी के प्रतीक 'श्री विसा यंत्र' की पूजा की जाती है, जो एक पर्दे में ढकी रहती है। मंदिर के पुजारियों ने शक्ति-स्थल को इस तरह सजाया है कि यह एक मूर्ति जैसा दिखता है। अंबाजी मंदिर में आकर एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव होता है। यह भी यहां की एक खासियत है।

श्री विसा यंत्र, जिसे श्री दुर्गा

बीसा यंत्र भी कहते हैं, मां दुर्गा का एक शक्तिशाली यंत्र है। यह यंत्र धन, संपत्ति, स्वास्थ्य, सौभाग्य, और परिवार संरक्षण के लिए माना जाता है। मान्यता है कि इस यंत्र की पूजा करने से बुरे सपने दूर होते हैं और सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। यह त्रिकोण के आकार का होता है और इसमें एक केंद्र और उसके आस-पास नौ त्रिकोण के खाने होते हैं। इन खानों में 1 से 9 तक के अंक लिखे होते हैं और त्रिकोण के केंद्र में 'दुं' लिखा होता है। यंत्र के तीन ओर 'ओम दुं दुं दुं दुर्गायै नमः' मंत्र लिखा होता है। मान्यता है कि श्री यंत्र जिस जगह पर भी होता है, वहां का वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है।

अंबाजी शक्तिपीठ में स्थापित श्री विसा यंत्र इतना पवित्र है कि भक्तों को यंत्र देखने की अनुमति नहीं है। चूंकि इसे नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता और इसकी फोटो भी नहीं ली जा सकती। इसकी पूजा करने के लिए आंखों पर पट्टी बांधी जाती है। मान्यता है कि इस तरह पूजा करने से भक्त देवी के साथ एक अद्वितीय संबंध स्थापित कर पाते हैं।

अंबाजी मंदिर की प्रसिद्धि यूं तो पूरे देश में है, लेकिन गुजरात के अलावा राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि राज्यों से सबसे अधिक भक्त यहां आते हैं।

• असम...

कामाख्या देवी मंदिर

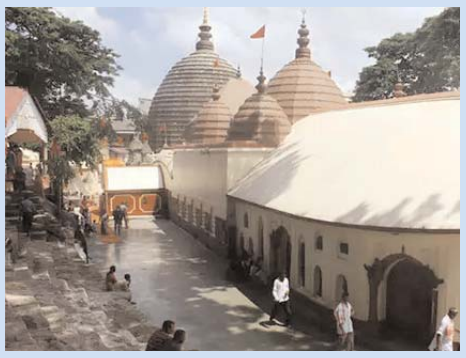

माता कामाख्या देवी मंदिर पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यह मंदिर 52 शक्तिपीठों में से एक है। भारतवर्ष के लोग इसे अघोरियों और तांत्रिक का गढ़ मानते हैं। असम की राजधानी दिसपुर से लगभग 10 किमी दूर नीलांचल पर्वत पर स्थित है। मंदिर की खास बात यह है कि यहां न तो माता की कोई मूर्ति है और न ही कोई तस्वीर। बल्कि यहां एक कुंड है, जो हमेशा ही फूलों सें ढंका हुआ रहता है। इस मंदिर में देवी की योनी की पूजा होती है। आज भी माता यहां पर रजस्वला होती हैं। मंदिर से जुड़ी और भी ऐसी रहस्यमयी बातें हैं, जिन्हें जानने के बाद आप हैरत में पड़ जाएंगे। तो आइये जानते हैं कामाख्या देवी के मंदिर से जुड़ी दिलचस्प बातों के बारे में।

▸▸ मंदिर धर्म पुराणों के अनुसार विष्णु भगवान ने अपने चक्र से माता सती के 51 भाग किए थे। जहां-जहां यह भाग गिरे वहां पर माता का एक शक्तिपीठ बन गया। इस जगह पर माता की योनी गिरी थी, इसलिए यहां उनकी कोई मूर्ति नहीं बल्कि योनी की पूजा होती है। आज यह जगह शक्तिशाली पीठ है। दुर्गा पूजा, पोहान बिया, दुर्गादेऊल, बसंती पूजा, मदान देऊल, अम्बुवासी और मनासा पूजा पर इस मंदिर की रौनक देखते ही बनती है।

▸▸ बताया जाता है कि कामाख्या देवी का मंदिर 22 जून से 25 जून तक बंद रहता है। माना जाता है कि इन दिनों में माता सती रजस्वला रहती हैं। इन 3 दिनों में पुरुष भी मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते। कहते हैं कि इन 3 दिनों में माता के दरबार में सफेद कपड़ा रखा जाता है, जो 3 दिनों में लाल रंग का हो जाता है। इस कपड़े को अम्बुवाची वस्त्र कहते हैं। इसे ही प्रसाद के रूप में भक्तों को दिया जाता है।

▸▸ मान्यता है कि जो लोग इस मंदिर के दर्शन तीन बार कर लेते हैं, तो उन्हें सांसारिक भवबंधन से मुक्ति मिल जाती है। यह मंदिर तंत्र विद्या के लिए मशहूर है। इसलिए दूर दूर से साधु संत भी यहां दर्शन के लिए आते हैं।

▸▸ हर साल यहां विशाल मेला लगता है। जिसे अंबुवाची मेला कहते हैं। यह मेला जून में लगता है। यह मेला उसी दौरान लगता है, जब माता मासिक धर्म से होती हैं। इस दौरान मंदिर में जाने की अनुमति किसी को नहीं होती।

▸▸ भक्तों की मनोकामना पूरी होने के बाद कन्या भोजन कराया जाता है। वहीं कुछ लोग यहां जानवरों की बलि देते हैं। खास बात यह है कि यहां मादा जानवरों की बलि नहीं दी जाती।

नवरात्र में कन्या पूजन

सनातन धर्म के प्रमुख पर्व शारदीय नवरात्र का आरंभ हो गया है। नवरात्र में पूजा-पाठ करने के साथ-साथ व्रत रखना भी शुभ माना जाता है। नवरात्रि में आने वाली अष्टमी और नवमी तिथि के दिन कन्या पूजन किया जाता है। जहां कुछ लोग अष्टमी तिथि के दिन माता दुर्गा की पूजा करने के बाद कन्या पूजन करते हैं, तो कुछ लोग नवमी की पूजा के बाद कन्या पूजन करते हैं। देश के कई राज्यों में कन्या पूजन को कुमारिका पूजन, कंजक और कन्या पूजा के नाम से भी जाना जाता है। चलिए जानते हैं इस साल कन्या पूजन किस दिन करना शुभ रहेगा।

● **कन्या पूजन का महत्व**- कन्या पूजन के लिए घर में पूरी, छोले, चना और हलवा बनाया जाता है। 2 से 8 साल की 7 या 11 कन्याओं और एक लड़के को घर बुलाया जाता है। सभी कन्याओं की पूजा की जाती है। आदरपूर्वक उन्हें भोजन कराया जाता है। अंत में हर एक कन्या को धन व उपहार देकर विदा किया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कन्याओं को माता दुर्गा का स्वरूप माना जाता है। इसी वजह से नवरात्रि के अंतिम दिन कन्या पूजन करके माता दुर्गा को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है। इससे माता का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है, जिससे घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहती है।

कन्या पूजन के लिए घर में पूरी, छोले, चना और हलवा बनाया जाता है। 2 से 8 साल की 7 या 11 कन्याओं और एक लड़के को घर बुलाया जाता है। सभी कन्याओं की पूजा की जाती है। आदरपूर्वक उन्हें भोजन कराया जाता है।

अंत में हर एक कन्या को धन व उपहार देकर विदा किया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कन्याओं को माता दुर्गा का स्वरूप माना जाता है...

● **कन्या पूजन कब है**-वैदिक पंचांग के अनुसार, इस बार शारदीय नवरात्रि की अष्टमी तिथि 10 अक्टूबर 2024 को दोपहर 12:31 मिनट से शुरू हो रही है, जो 11 अक्टूबर 2024 को दोपहर 12 बजकर 06 मिनट तक रहेगी। 11 अक्टूबर 2024 को जैसे ही अष्टमी तिथि का समापन होगा, वैसे ही नवमी तिथि का आरंभ हो जाएगा। नवमी तिथि का समापन 12 अक्टूबर 2024 को सुबह 10 बजकर 57 मिनट पर होगा।

ऐसे में उदयातिथि के आधार पर इस साल शारदीय नवरात्र की अष्टमी और नवमी तिथि का व्रत 11 अक्टूबर को एक दिन ही रखा जाएगा, जिस दिन कन्या पूजन करना भी शुभ रहेगा। 11 अक्टूबर 2024 को सुबह 10:41 से पहले कन्या पूजन करने का शुभ मुहूर्त है, जिसके बाद दोपहर 12:08 मिनट तक राहुकाल रहेगा।

● **कन्या पूजा की विधि**

● कन्या पूजा के दिन प्रात: काल जल्दी उठें।

● स्नान आदि कार्य करने के बाद शुद्ध वस्त्र धारण करें।

● माता दुर्गा की पूजा करने के बाद व्रत और कन्या पूजन करने का संकल्प लें।

● कन्या पूजा के लिए घर में अपने हाथों से चना, पूरी, हलवा और छोले बनाएं।

● इन सभी चीजों का भोग सबसे पहले माता रानी को लगाएं।

● उसके बाद घर आई कन्याओं के साफ पानी से पैर धोएं।

● कन्याओं को टीका लगाएं और उनके हाथ पर रक्षा सूत्र बाधें।

● कन्याओं को प्रसाद खिलाएं।

● अपनी क्षमता अनुसार सभी कन्याओं को पैसे या गिफ्ट जरूर दें।

● अंत में कन्याओं के चरण स्पर्श करके उन्हें विदा करें।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• दुर्गाष्टमी...

घर लाएं ये चीजें

दुर्गाष्टमी के दिन दुर्गा सप्तशती या दुर्गा चालीसा के पाठ करने से माता प्रसन्न तो होती ही हैं, लेकिन इस दिन यदि ये 4 चीजें कोई भी भक्त अपने घर लाता है तो उसकी आर्थिक समस्याएं भी दूर हो जाती है। दुर्गाष्टमी से पहले चन्दन की लकड़ी खरीद कर जरूर ले आएं। ऐसा करने से माता दुर्गा आप पर कृपा कर सकती हैं। नवरात्रि के दौरान घर में मोरपंख को रखने से आर्थिक संकट दूर होती है। साथ ही रुके हुए धन की भी प्राप्ति होती है। नवरात्र में चांदी की खरीदारी करना शुभ माना जाता है। दुर्गाष्टमी को मिट्टी से बना हुआ घर अवश्य लाना चाहिए। ऐसा करने से संपति से जुड़ा विवाद दूर हो जाता है। इतना ही नहीं माता दुर्गा के आशीर्वाद से आप नई प्रॉपर्टी भी खरीद सकते हैं।

• मंदिर के नीचे...

आजकल बहुत से लोग दीवार पर लकड़ी का मंदिर लगाते हैं। ऐसे में आपको ध्यान रखना चाहिए कि आप मंदिर के नीचे डस्टबिन न रखें। इसके अलावा जिस कमरे में आपका पूजा घर है, आपको वहां भी डस्टबिन रखने से बचना चाहिए। ऐसा करने से माता लक्ष्मी की कृपा आप पर नहीं बरसती क्योंकि माता लक्ष्मी उस घर में वास नहीं करतीं, जहां पर कूड़ा फैला रहता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित